महाभिनिष्क्रमण

विमल चंद्र पाण्डेय

कहानी

महानिर्वाण

विमल चंद्र पांडेय

महानिर्वाण

ऐसा नहीं कि हमेशा आगे देखना ही आसान होता है। कभी-कभी पीछे देखने का विकल्प बहुत आसान और सुरक्षित होता है। पीछे देखते हुए भी इस कठोर दुनिया में सुरक्षित चला जा सकता है। मैं एक ऐसा जहाज हूँ जो इस विशाल समंदर में रास्ता भटक गया है। मैं आगे जा रहा हूँ या पीछे, कहना मुश्किल है। यहाँ एक सवाल उठना यह भी लाजिमी है कि क्या मैं कहीं जा रहा हूँ और इसका उप सवाल यह है कि मैं आखिर कर क्या रहा हूँ? फिर कहीं दूर जाकर एक वाहियात सवाल भी जरूर सिर उठाएगा जो आगे किसी सवाल के लिए गुंजाइश नहीं छोड़ेगा। आखिरकार मैं हूँ कौन?

सागर/दिसंबर 2007

इसके बाद बाबू जीवनलाल, जो +5.5 का चश्मा पहनते हैं, एक संस्थान में काल पढ़ाते हैं और हिंदी कविता के धूमकेतु कहे जाते हैं, रुक जाते हैं। पिछले कई दिनों से उनकी डायरी इसी तरह के फिजूल के सवालों पर खत्म हो जा रही है। वह हमेशा की तरह अपनी आर्थिक और साहित्यिक गतिविधियों को ब्यौरा लिखना चाह रहे हैं। वह लिखना चाह रहे हैं कि आज उन्होंने एक नई चप्पल खरीदी है जिसने घर से संस्थान आने-जाने भर में (जबकि पैदल सिर्फ 100 मीटर ही चलना पड़ता है) दाहिने पैर में तीन जगह और बाएँ पैर में दो जगह काट खाया है। वह लिखना चाह रहे हैं कि संस्थान में दो कक्षाओं के बीच के अंतराल के दौरान अचानक उन्हें कोई सुंदर बिंब सूझा हे जिसके इर्द-गिर्द एक बहुत लाजवाब कविता रची जा सकती है। कि कल रात वह पेटसफा चूर्ण खाना भूल गए थे और सुबह शौच के समय आँखों से जो आँसू निकले थे वह न खुशी के थे न दुख के। कि आज एक नए मगर प्रतिभाशाली कवि ने अखबारी साक्षात्कार में उन्हें अपना गुरु माना है।

पर वह ऐसी बहुत-सी बातों में से कोई भी बात नहीं लिख पाते। यह उनकी सेवानिवृत्ति का दिन नजदीक आने के कारण है या वे सठिया गए हैं, वे समझ नहीं पाते। उन्हें एक आशावादी कवि की तरह साठ में जाने का एक अलग तरह का उत्साह आकर्षित कर रहा था और इसके लिए उनके पास एक से बढ़कर एक सौम्य योजनाएँ थीं। मगर इधर कुछ दिनों से उन्हें इस अनजान समस्या ने ऐसा जकड़ा है कि बीता पूरा जीवन कचरा लगने लगा है। कवि कर्म के लिए मिले ढेरों पुरस्कार जो पहले देखने पर गर्व से सिर उठाए दिखते थे, अब ऐसे दिखाई देते हैं मानो कोई आलमारी का कोना पकड़ कर बरसों से अपनी निरर्थकता पर बिना नहाए विलाप कर रहा हो।

सब कुछ विस्तार से समझने के लिए कवि जीवनलाल जो गठियाग्रस्त घुटनों की वजह से लंबे समय तक खड़े नहीं रह सकते और पुरवा चलने पर बाप-बाप चिल्लाते हैं, की डायरी के पिछले पन्नों पर नजर मारते हुए थोड़ा पीछे की मन:स्थिति समझनी होगी। भला हो उन समझदार विद्यार्थियों का, जब से जीवनलाल गठिया के रोगी हुए हैं, किसी दैवीय कृपा से उन्हें हर बैच में इतने समझदार बच्चे मिले हैं जिन्हें खड़े होकर पढ़ाना नहीं पड़ता, सिर्फ इशारा कर देना ही काफी रहा है।

पीछे नजर डालने पर पता चलता है कि जब जीवन लाल नहीं थे तब वह हरे थे। उनमें जीवन का खूब पर्णहरित था और वह हरदम झूमते रहते थे। उन दिनों कवि जीवनलाल ने कविताएँ लिखनी शुरू ही की थीं और इसे इतनी गंभीरता से लिया करते मानो इससे वह सरकार गिराने की ताकत रखते हैं।

वे उनके निर्माण के दिन थे। वह स्नातक हो रहे थे, बालिग हो रहे थे, कवि हो रहे थे और दुनिया की नजरों में कुछ नहीं हो रहे थे। ये वे दिन थे जिनके बारे में आज के कुछ गुमराह लोग यह अफवाहें उड़ाते हैं कि उन दिनों नौकरियाँ बड़ी आसान थीं। जीवनलाल ने स्नातक होने के बाद जो खजाना जुटाया था वह लंबे मोटे कागज पर छपे उनके प्रमाणपत्रों के अलावा कुछ पोस्टकार्ड और लिफाफों में बिखरा हुआ था। ये

अब तक की उनकी कविताई पर मिले प्रशंसा और प्रोत्साहन पत्र थे जिनमें कुछ अति-उत्साहित पाठिकाओं के लगभग प्रेममत्र भी शामिल थे। नौकरी के लिए जब वह मयमित्रमंडली संघर्ष करने लगे तो कुछ समय के लिए सारी कविताई छूट गई। उन्हीं दिनों वे और उनके मित्र सिगरेट से परिचित हुए और जल्दी ही घनिष्ठ हो गए।

बहरहाल, स्नातक के बाद परास्नातक और फिर केंद्र सरकार की योजना के तहत काल पढ़ाने की नौकरी मिलने की तह में जाना एक अवांतर प्रसंग होगा। यहाँ कहानी का नायक कुछ देर के लिए सिगरेट है। उनके मित्रों की कम, उनकी ज्यादा। नौकरी न मिलने के कठिन दिनों में हमराही बनी सिगरेट नौकरी मिलने के बाद और आत्मीय हो गई। कुछ समय बाद एक-एक करके मित्रों के बैंड बजने लगे। कुछ वर्षों बाद जीवनलाल की भी शादी हुई। जीवन लाल के साथ बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी भी हो गया। एक अमहत्वाकांक्षी प्रशिक्षक के दिन जितने मजे से गुजर सकते हैं, उनके भी गुजरने लगे। इसी बीच उन्हें अपनी अस्त-व्यस्त जीवन शैली का बोध हुआ। पत्नी के साथ पेश आ रही कुछ मुश्किलों से या सिर्फ तीन मंजिल चढ़कर हाँफ जाने के भय से जीवनलाल ने अपने जीवन को व्यवस्थित करने के लिए कुछ कठिन संकल्प लिए।

सिगरेट छोड़ देना उनमें सबसे ऊपर था।

हालाँकि कवि के जीवन में और महत्वपूर्ण संकल्प भी साथ चलते रहे हैं। जब उन्होंने अपने इस संकल्प के बारे में अपने मित्रों ईश्वरी, चंद्रप्रकाश और ओंकारनाथ को सुनाया तो उन्होंने इसे ऐसा सुना जैसे रोज सुनते हों। किसी ने कोई तवज्जो नहीं दी और निर्विकार भाव से धुआँ उड़ाते रहे।

फिर उनके और सिगरेट के बीच एक आँखमिचौली शुरू हुई जो आज तक जारी है। सिगरेट ही नहीं, इस सूची में धीरे-धीरे चीजें बढ़ीं भी जो उनका अधिकांश समय और ऊर्जा खाती रही हैं।